Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Research Article

डॉ. भीमराव अम्बेडकर के शैक्षिक विचारों का राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सन्दर्भ में अध्ययन

डॉ. धर्मेन्द्र कुमार शर्मा [1], महेश कुमार [2*]

[1] सहायक आचार्य, श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय, सी.टी.ई. केशव विद्यापीठ, जामडोली, जयपुर, राजस्थान, भारत

[2] शोधार्थी, शिक्षा विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान

Corresponding Author: *महेश कुमार

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18449820

सारांश

डॉ. भीमराव अम्बेडकर के शैक्षिक विचारों की प्रमाणिकता राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में समाहित है। उनके अनुसार सबकों शिक्षा, गुणवत्ता, मातृभाषा, समान, रोजगारपरक तथा नैतिकतापरक शिक्षा। क्योंकि शिक्षा ही अच्छे लोकतन्त्र, जीवन के सभी मूल्यों तथा संस्कृति को सशक्त करती है। भारतीय शिक्षाविदों जैसे टैगोर, राधाकृष्णन, गाँधी, फूले, विवेकानन्द, अरविन्द जाकिर हुसैन और मालवीय ने शिक्षा के क्षेत्र में विशेष योगदान दिया है। प्लेटो का विचार था कि किसी भी राज्य का निर्माण कंकीट और पेड़-पौधों से नहीं होता है, बल्कि उसमें रहने वाले व्यक्तियों के चरित्र से होता है। इन मूल्यवान और उच्च चरित्रवान व्यक्तियों के निर्माण से शिक्षा की विशेष भूमिका होती है। डॉ. भीमराव अम्बेडकर के शैक्षिक विचारों ने शिक्षा जगत के साथ-साथ सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में अपनी अमिट छाप छोड़ी है। उन्होंने अपने आचारण, भाषणों, लेखों और पुस्तकों में शिक्षा और उसके उद्देश्यों की व्यापक चर्चा की है एवं सुदृढ़ लोकतन्त्र में व्यक्ति का नैतिक, चारित्रक एवं बौद्धिक विकास अत्यन्त आवश्यक है। उनके अनुसार सामाजिक न्याय, समानता और लोकतान्त्रिक मूल्यों की स्थापना एक नागरिक में शिक्षा के माध्यम से ही सम्भव है। प्रस्तुत लेख में डॉ. भीमराव अम्बेडकर के शैक्षिक विचारों का राष्ट्रीय शिक्षा नीति-*2020* के सन्दर्भ में अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2584-184X
- **Received:** 20-12-2025
- **Accepted:** 29-01-2025
- **Published:** 01-02-2026
- **IJCRM:**4(1); 2026: 233-236
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

शर्मा डी. के., कुमार एम. भीमराव अंबेडकर के शैक्षिक विचारों का राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में अध्ययन. इंडियन जर्नल ऑफ मॉडर्न रिसर्च रिव्यू. 2026;4(1):233-236.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मुख्य शब्द: (NEP- 2020) राष्ट्रीय शिक्षा नीति, (Interactive) पारस्परिक क्रियाशीलता, (Educational Idies) शैक्षिक विचार ।

© 2026 डॉ. धर्मेन्द्र कुमार शर्मा, महेश कुमार. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रस्तावना

भारतरत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर की पहचान एक युग पुरुष के रूप में हुई। बोधिसत्व बाबा साहब को संविधान निर्माता भी कहा जाता है। इनकी पहचान विश्व पटल पर भी छायी हुई है। इनका जन्म साधारण व अधिकारों से वंचित परिवार में हुआ। असहनीय पीड़ा का दंश झेलकर मानव जाति के विकास के लिए जो करके दिखाया वो आज जीवंत है। आधुनिक भारत में डॉ. अम्बेडकर थे शिक्षित लोगों की श्रेणी में गिना जाता है। बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर का जन्म 14 अप्रेल, 1891 में महू (मध्यप्रदेश) में हुआ, इनकी माता का नाम भीमा बाई व पिता रामजी मालोजी सकपाल थे। जो महार जाति से थे जो उस समय 'अछूत' मानी जाति थी। बाबा साहब बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि के थे। 1907 में मैट्रिकुलेशन अच्छे अंकों से पास की। बड़ौदा के राजा गायकवाड़ ने खुश होकर 25 रुपये प्रतिमाह छात्रवृत्ति देना शुरू किया। बी.ए. पास करने के बाद महाराजा ने उसे सेना में लेफ्टीनेन्ट पद पर नियुक्त किया परन्तु छुआछूत के कारण उन्होंने त्याग पत्र दे दिया। अम्बेडकर के शैक्षिक विचारों से प्रभावित होकर बड़ौदा महाराज ने उच्च शिक्षा के लिए अमेरिका भेज दिया। जहाँ पर अम्बेडकर ने एम.ए. व पी.एचडी. की उपाधि प्राप्त की। और इसी बीच कानून की पढ़ाई के लिए डी.एस.सी. की तैयारी भी प्रारम्भ कर दी। आगे की पढ़ाई के लिए 1923 में वे इंगलैंड चले गये वहाँ सी.डी.एस.सी. एवं बार एट लॉ की उपाधियाँ प्राप्त की। डॉ. अम्बेडकर उच्च शिक्षा अध्ययन में अद्वितीय मानदण्ड स्थापित किये। कोलम्बियाँ विश्वविद्यालय और लन्दन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से अर्थशास्त्र में डॉक्टर इन फिलॉसफी की उपाधियाँ प्राप्त की। बाबा साहब को एक प्रतिष्ठित अर्थशास्त्री लेखक, वक्ता, पत्रकार, कानूनविद्ध और समाजशास्त्री के रूप में जाना जाता है।

इनके जीवन चरित्र पर बुद्ध, फूले, साहूजी, प्लेटो, डॅयूबी, एतिवज सेलियमैन, गाँधी, विवेकानन्द और अरविन्द जैसे महान विचार को का गहरा प्रभाव रहा है। अम्बेडकर की शिक्षा में महत्वकांक्षा और समतामूलक की छाप स्पष्ट झलकती है। उन्होंने मानव समाज के विकास के लिए तीन मूल मन्त्र दिए, शिक्षित बनो, संगठित रहो, संघर्ष करो। बाबा साहब के शब्दों में "समाज में शिक्षा ही समानता ला सकती है", उन्होंने शिक्षा को सुलभ और सस्ती बनाने पर जोर दिया ताकि वंचित से वंचित वर्ग भी शिक्षा प्राप्त कर सके। उनके लेखों व भाषणों में सामाजिक न्याय, समानता, नैतिकता और राजनैतिक चेतना पर भी बल दिया। उन्होंने संविधान की धारा 45 में राज्य के नीति निर्देशक तत्वों के अन्तर्गत 14 वर्ष से कम आयु के सभी बालक-बालिकाओं को निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था करने का कानून बना दिया।

इसी प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 कि प्रस्तावना में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने पर जोर दिया। शिक्षा से ही समाज में समानता, समावेशन और सामाजिक-आर्थिक रूप में गतिशीलता हासिल की जा सकती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 में शिक्षा के उद्देश्य, शिक्षक, शिक्षार्थी, विद्यालय, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि आदि के बारे में विस्तृत चर्चा की गयी है। जिसका अध्ययन करने पर पता चलता है कि डॉ. भीमराव अम्बेडकर के शैक्षिक विचार राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 से समानता रखते है।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने शिक्षा के क्षेत्र में केवल सिद्धान्त निर्माण ही नहीं किया, बल्कि शैक्षणिक संस्थाओं में उन सिद्धान्तों को व्यवहारिकता के साथ धरातल पर आया जाए, इस पर विशेष रूप से प्रकाश डाला है।

डॉ. अम्बेडकर के शैक्षिक विचारों का सिद्धान्त

डॉ. अम्बेडकर को आज भी अधिकांश लोग एक महान शिक्षाविद्व, संविधान, निर्माता, दलितों उद्धारक मानते है। किन्तु उन्होंने मानव जीवन और समाज की प्राण वायु के रूप में भी काम किया है। डॉ. अम्बेडकर का गतिशील, प्रभावशाली व्यक्तित्व बहुआयामी था। उन्होंने केवल दलितों के अधिकारों के लिए ही संघर्ष नहीं किया था बल्कि संविधान में दिए गये अधिकारों की रक्षा के लिए पर्यारत उपाय किये। जहाँ एक ओर लोगों ने राजनैतिक क्षेत्र में उनकी बुद्धिमता का लोहा माना वही दूसरी तरफ वे सामाजिक परिवर्तन के पुरोधा बनकर उभरे। और इस कार्य में उन्होंने शिक्षा को प्रमुख स्थान दिया। उनकी सैद्धान्तिक व व्यावहारिक शिक्षा ने राष्ट्र निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया। उनके अनुसार शिक्षित समाज में जातिवाद एवं साम्प्रदायिकता के स्थान पर सर्वधर्म समभाव एवं मानवतावाद की शिक्षा समान रूप से प्राप्त होनी चाहिएं जिससे किसी भी स्तर पर किसी के साथ भेदभाव न हो सके अर्थात् 'सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय।' डॉ. अम्बेडकर के अनुसार शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मानव सेवा होना चाहिए। साथ ही उनके द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों, विद्यार्थियों के प्रवेश, शिक्षा के स्वरूप, परीक्षा प्रणाली, अध्यापकों के गुण, तकनीकी शिक्षा, शिक्षा में अनुसूचित जातियों का प्रतिनिधित्व आदि विषयों का उल्लेख करते हुए समय-समय पर स्वरचित पुस्तकों एवं भाषण में ध्यानकर्षण किया है। जिनके द्वारा वर्तमान और भविष्य के शैक्षिक संसार को नई दिशाएँ प्राप्त हो सकती है।

सामाजिक समानता का सिद्धान्त

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य सामाजिक उत्थान है। डॉ. अम्बेडकर जातिवाद, छुआछूत, सामाजिक भेदभाव सामाजिक और आर्थिक विषमता, लिंग असमानता आदि के कट्टर विरोधी थे। अम्बेडकर के अनुसार, भारत में सभी धर्म और सामाजिक तंत्र उपरोक्त सामाजिक बुराईयों से पीड़ित है। ऐसे समस्त भारतीय समाज को दमन शोषण तथा अन्याय से मुक्त करने के लिए डॉ. . अम्बेडकर ने जीवन भर संघर्ष किया। उनका मानना था कि शिक्षा न केवल प्रत्येक मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का महत्वपूर्ण औजार भी है। इसके लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 ने भी सभी के लिए समतामूलक और समावेशी शिक्षा को अनिवार्य करने की पहल की है।

नारी शिक्षा का सिद्धान्त

20 जुलाई 1942 को नागपुर में अपने एक सम्बोधन के दौरान डॉ. अम्बेडकर ने कहा कि, "मैं किसी भी समाज की प्रगति का स्तर उस समाज की नारियों की प्रगति स्तर से मापता हूँ।" उनका स्पष्ट विचार था कि जब तक किसी भी राष्ट्र की आधी आबादी अशिक्षित रहेगी तब तक व राष्ट्र विकसित राष्ट्र नहीं बन सकता। वे सदैव नारी शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। वे नारी व पुरुष को एक गाड़ी के दो पहिये मानते थे। उनका मत था कि जैसे गाड़ी को आगे बढ़ने के लिए दोनों पहियों का समान होना आवश्यक है वैसे ही परिवार, समाज और राष्ट्र की प्रगति के लिए नर और नारी का समान रूप से शिक्षित होना अत्यन्त

© 2026 डॉ. धर्मेन्द्र कुमार शर्मा, महेश कुमार. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

आवश्यक है। एक नारी माँ के साथ-साथ परिवार की महत्वपूर्ण ईकाई है। रा.शि.नि. 2020 में भी सभी वर्गों के साथ-साथ महिलाओं और ट्रांस जेण्डर के लिए भी समान गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने संकल्पित है, इसके लिए रा.शि.नि. 2020 में लिंग समावेशन कोष (जी.ई.आर.) स्थापित करने का प्रावधान प्रस्तावित है।

नैतिक और चरित्र निर्माण का सिद्धान्त

डॉ. आंबेडकर ने व्यक्तिगत और सामाजिक विकास के लिए नैतिक मूल्यों को सर्वोपरि माना। वे शिक्षा को समृद्धि का साधन के साथ-साथ नैतिक और चरित्र निर्माण का महत्वपूर्ण अंग मानते थे। डॉ अम्बेडकर के अनुसार, नैतिक मूल्य विहीन शिक्षा। कदापि शिक्षा नहीं कहा जा सकता, ऐसी शिक्षा मनुष्य नहीं पशु पैदा करती है। शिक्षा को के सामाजिक, आर्थिक, नैतिक, चारित्रिक, राजनीतिक विकास के साथ साथ सार्वभौमिक विकास का संवाहक मानते थे। उनका विश्वास था कि अगर लोगों को शिक्षित करने में नैतिक मूल्यों और चरित्र निर्माण को उचित स्थान नहीं दिया जाता है, तो ऐसा शिक्षित व्यक्ति समाज के लिए अनुप्रयोगी ही होगा और अपने अनैतिक कार्यों से समाज को दूषित करने का प्रयास करेगा। 12 फरवरी, 1938 को बॉम्बे प्रांत के दलित वर्ग युवा सम्मेलन को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि श्चरित्र और विनम्रता के बिना एक शिक्षित व्यक्ति जानवर से भी अधिक खतरनाक है, नैतिक और चरित्रिक मूल्य विहीन शिक्षा गरीबी उन्मूलन के लिए घातक होगी। ऐसी ही सोच के साथ राशि.नि.. 2020 को आगे बढ़ाया गया है जो छात्रों के चरित्र निर्माण और नैतिक जीवन मूल्य सहित समग्र विकास पर केन्द्रित शिक्षा की संकल्पना को उजागर करती है। यह नीति छात्रों को सस्कारवान बनाते हुए भारतीयता की मूल भावना से जोड़ने के लिए प्रतिबद्ध है।

वैज्ञानिकता और स्वच्छता का सिद्धान्त

डॉ. अम्बेडकर के वैज्ञानिक दृष्टिकोण ने जीवन के सभी पहलुओं में कारण, साक्ष्य और आलोचनात्मक मूल्यांकन के महत्व पर प्रकाश डाला है। उनका मानना था कि किसी भी बात को इसलिए नहीं मानना चाहिए क्योंकि दो कालान्तर से चली आ रही है अपितु उसे सत्यता और वैज्ञानिकता की कसोटी पर परखना चाहिए। वे वैज्ञानिक सोच समाज की प्रगति के लिए अत्यंत आवश्यक समझते थे। उन्होंने सामाजिक वास्तविकताओं को समझने में अनुभवजन्य साक्ष्यों के उपयोग की वकालत की। डॉ. अम्बेडकर प्राथमिक स्तर से ही वैज्ञानिक शैक्षिक गतिविधियों के पक्षधर थे। डॉ. अम्बेडकर, अरस्तू के सिद्धांत "स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है" के भी प्रबल समर्थक रहे हैं। उनके अनुसार बच्चों के अच्छे स्वास्थ्य के लिए उनमें साफ-सफाई की आदत और शारीरिक विकास को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। समाज के दलित और वंचित वर्गों के बच्चों के बारे में उनका मानना था कि, "ऐसे बच्चों के लिए पहला पाठ नहा-धोकर स्वच्छ रहना, दूसरा पाठ साफ-सुथरा संतुलित भोजन होना चाहिए। इसके लिए स्कूलों को उन्हें प्रेरित करना चाहिए ताकि बाकी बच्चे सबक ले सके।" रा.शि.नि. 2020. स्कूली पाठ्यक्रम में स्वच्छता, साफ-सफाई, वैज्ञानिक सोच, पूछताछ, खोज, चर्चा और विश्लेषण-आधारित सीखने के लिए पथ प्रशस्त करती दिखती है और प्रत्येक विषय में इन मुद्दों की अनिवार्यता पर बल देती है।

मातृभाषा का सिद्धान्त

डॉ. अम्बेडकर के मातनुसार मातृभाषा शिक्षा का एक मुख्य साधन है। अगर बच्चे को उसकी मातृभाषा में शिक्षा दी जावें तो उसमें बेहतर समझ विकसित होती है व आत्मविश्वास बढ़ता है। उनके अनुसार भाषा सीखना बच्चे के संज्ञानात्मक विकास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। डॉ. अम्बेडकर ने प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा देने की वकालात की लेकिन वैश्विक स्तर की प्रगति के लिए कम से कम एक विदेशी भाषा के ज्ञान भी अनिवार्यता बताई। उन्होंने संविधान सभा में संस्कृत भाषा को राष्ट्रीय भाषा या राज्य भाषा घोषित करने की बात कही है। रा.शि.नि. 2020 में भी प्राथमिक स्तर की शिक्षा मातृभाषा में दी जाने का प्रावधान है। साथ संस्कृत भाषा को वरीयता दिये जाने बात कही गई है। रा. शि..नि. 2020 में भारतीय विश्वविद्यालयों में संस्कृत सहित अन्य भारतीय भाषाओं के विभागों को सुदृढ़ करने की प्रतिबद्धता व्यक्त की गई है। यह एक वैज्ञानिक तथ्य है कि रचनात्मकता, सृजनात्मकता, नवाचार एवं शोध-अनुसंधान मातृभाषा में ही सम्भव है।

रोजगारपरक शिक्षा का सिद्धान्त

शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य व्यक्ति को जीविकोपार्जन योग्य और आत्मनिर्भर बनाना भी है। जिससे वह समाज में गरिमामयी जीवन निर्वाह कर सके। डॉ. अम्बेडकर शिक्षा को कौशल से जोड़ने के पक्षधर थे, क्योंकि कोशल विकास जीविकोपार्जन का सघन साधन है। उनका मानना था कि शिक्षा तभी अपने उद्देश्यों में पूर्ण समझी जाएगी जब उसके साथ कोई कोशल जुड़ा हो और वह कोशल व्यक्ति के लिए जीविकोपार्जन में सहायक हो। इसलिए उन्होंने तकनीकी शिक्षा पर जोर दिया और इसे समाज में वंचित एवं पिछड़े वर्गों के उत्थान के लिए आवश्यक माना। वे किसी अमुक कार्य/व्यवसाय को किसी निश्चित जाति/समाज से जोड़ने के प्रबल विरोधी थे। डॉ. अम्बेडकर अपने व्यवहारवादी दृष्टिकोण की वजह से पाठ्यक्रम के निर्माण में उपयोगिता को आधार मानते थे। वे किसी रूढ़िवादी पाठ्यक्रम के पक्षधर नहीं थे। उन्होंने माना था कि "इस संसार में कुछ भी अमर और अंतिम नहीं है, हर चीज की जांच और परख आवश्यक है, हर चीज कारण प्रभाव के घेरे में आती है। कुछ भी सनातन नहीं है, यहाँ हर चीज परिवर्तनीय है। इसलिए समय के अनुरूप उनमें बदलाव होते रहना चाहिए। इस दिशा में रा.शि.नि.- 2020 में दक्षता आधारित और कोशल परक शिक्षा का प्रावधान किया गया है साथ ही कक्षा 6 से ही छात्रों को कोडिंग सीखने और प्रशिक्षुता का प्रावधान सुनिश्चित किया गया है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में, यह कहा जा सकता है कि डॉ. अम्बेडकर का शैक्षिक दर्शन प्राचीन और आधुनिक विचारों का सम-मिश्रण है। अगर शिक्षा उपरोक्त उद्देश्यों को पूरा नहीं करती तो वह निरर्थक और निराधार है। डॉ. आंबेडकर के स्पष्ट विचार थे कि वह शिक्षा जो व्यक्ति को योग्य न बनाए, समता, समानता और नैतिकता का पाठ न सिखा पाए, वह सच्चे अर्थों में शिक्षा हो ही नहीं सकती, शिक्षा तो समाज में मानवता और लोकतान्त्रिकता की रक्षा करती है, व्यक्ति की आजीविका का सहारा बनती है, उसको ज्ञान, धर्म और समानता का पाठ पढ़ाती है साथ ही समाज में जीवन मूल्यों का संवर्धन करती दिखती है। डॉ. अम्बेडकर का योगदान समतामूलक समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण है क्योंकि

© 2026 डॉ. धर्मेन्द्र कुमार शर्मा, महेश कुमार. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

उन्होंने भारतीय समाज के एक बहुत बड़े वर्ग (दलित, वंचित ओर स्त्रियों) के शैक्षिक विकास की आवश्यकता पर प्रकाश डाला जो लंबे समय से शिक्षा की मुख्यधारा से वंचित थे। आज भी डॉ. अम्बेडकर की शिक्षाएँ और चिन्तन विमर्श का शिक्षा सहित समाज के विभिन्न पहलुओं पर गहरा प्रभाव जारी है। वर्ष 2020 में, भारत सरकार ने शिक्षा प्रणाली को बदलने के उद्देश्य से 34 वर्ष उपरान्त एक नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 प्रस्तुत की है। जिसमें यदि डॉ. अम्बेडकर के शैक्षणिक चिंतन के चश्मे से देखा जाए तो भारत के पास एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था बनाने का अवसर है जो समानता, सामाजिक न्याय और सशक्तिकरण के सिद्धांत को बढ़ावा दे सकती है। समाजवेत्ताओं, नीति निर्माताओं, और शिक्षकों के सामूहिक प्रयासों से ही डॉ. अम्बेडकर के सपने को साकार किया जा सकता है, जिससे भारत में सभी शिक्षार्थियों का भविष्य उज्ज्वल हो सकता ळें

सन्दर्भ सूची

1. डेकर, उदयकुमार. डॉ. भीमराव अंबेडकर : मूल्य एवं वैज्ञानिक नियोजन के अग्रदूत. *नवहिंद टाइम्स* [इंटरनेट]. 2024; पृ. 136–138. उपलब्ध: www.navhindtimes.in
2. कुमार, अनीश. शिक्षा का लोकतांत्रिक मूल्य और डॉ. भीमराव अंबेडकर. *जनपथ.* 2023; पृ. 223–230. उपलब्ध: www.junputh.com
3. तिरड़िया, हेमाराम; कटारिया, कांता. डॉ. भीमराव अंबेडकर का शिक्षा दर्शन. *अपनी माटी ई-पत्रिका* (चित्तौड़गढ़, राजस्थान). 2022; पृ. 303–320.
4. नंद, सम्वय. गांधी व अंबेडकर के सपनों को पूरा करेगी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. *भारतीय बस्ती* [इंटरनेट]. 2020; पृ. 535–541. उपलब्ध: www.bhartiyabasti.com
5. मीणा, मीनाक्षी. *अंबेडकर : हाशियाकृत समाज के शिक्षाशास्त्री.* फॉरवर्ड प्रेस; 2017. पृ. 677–679. उपलब्ध: www.forwardpress.in
6. मेघनिरत्ता, कुलदीप. डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर का शैक्षिक दर्शन. *विश्व संवाद केंद्र भारत.* 2022; पृ. 129–140. उपलब्ध: www.vskbharat.com
7. फ्लैग, प्रतीम. डॉ. भीमराव अंबेडकर का शैक्षिक दृष्टिकोण. *राष्ट्रीय शिक्षा.* 2020; पृ. 1366–1378. उपलब्ध: www.rashtriyashiksha.com
8. राष्ट्रीय शिक्षा नीति. *शिक्षा मंत्रालय (पूर्ववर्ती मानव संसाधन विकास मंत्रालय), भारत सरकार.* 2020.

Creative Commons License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–NonCommercial–NoDerivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) License. This license permits users to copy and redistribute the material in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and the source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted.

About the author

डॉ. धर्मेन्द्र कुमार शर्मा श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय, सी.टी.ई. केशव विद्यापीठ, राजस्थान में सहायक आचार्य के रूप में कार्यरत हैं। शिक्षा क्षेत्र में अध्यापन एवं शोध का व्यापक अनुभव रखते हैं। उनकी रुचि शैक्षिक नवाचार, शिक्षक शिक्षा और शैक्षिक अनुसंधान में है।

महेश कुमार राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के शिक्षा विभाग में शोधार्थी हैं। उनका शोध क्षेत्र शिक्षा में समकालीन मुद्दे, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया तथा शैक्षिक मूल्यांकन से संबंधित है। वे शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्तापूर्ण शोध एवं अकादमिक लेखन में सक्रिय रूप से संलग्न हैं।

© 2026 डॉ. धर्मेन्द्र कुमार शर्मा, महेश कुमार. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/